12

सहजानन्द शास्त्रमाला

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

# शिशु धर्मबोध प्रथम भाग

रचयिता
अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ गुरुवर्य्य पूज्य श्री क्षुल्लक
मनोहर जी वर्णी 'सहजानन्द' महाराज

प्रकाशक
सुनील कुमार जैन सर्राफ
मंत्री सहजानन्द शास्त्रमाला
१८५ ए, रणजीत पुरी, सदर मेरठ (उ० प्र०)

सन्
२००२

मूल्य
१ रुपया

# प्रार्थना रूप में आत्म कीर्तन

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमःसिद्धेभ्यः।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।
धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः।।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया।
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय।।

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता दृष्टा आतमराम।।टेक।।

१

मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यहँ रागवितान।।१।।

२

मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान।
किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान।।२।।

३

सुख दुख दाता कोइ न आन, मोह राग रुष दुःख की खान।
निज को निज परको पर जान, फिर दुःखका नहिं लेश निदान।।३।।

४

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम।
राग त्यागि पहुंचू निज धाम, आकुलता का फिर क्या काम।।४।।

५

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम।
दूर हटो परकृत परिणाम, "राजजानन्द" हूँ अभिराम।।४।।

टलो परकृत परिणाम, "सहजानन्द" रहूँ अभिराम।।४।।

# शिशु धर्मबोध प्रथम भाग

## पाठ १

### णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

अर्थ - लोक में सब अरिहंतों को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो, आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो और साधुओं को नमरकार हो।

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पांचों को परमेष्ठी कहते है।

इस णमोकार मंत्र में ५ वाक्यपद व ३५ अक्षर और ५८ मात्रायें हैं।

### णमोकार मंत्र का माहात्म्य

एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।

इस णमोकार मंत्र का ध्यान सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है।

णमोकार मंत्र में किसी व्यक्ति को नमस्कार नहीं किया गया, किन्तु जो आत्मा शुद्ध हैं तथा जो आत्मा शुद्ध होने के प्रयत्न में सफल हो रहे हैं, उन्हें गुणों की दृष्टि से

नमस्कार किया गया है।

जो वीतराग (रागद्वेषादि दोष रहित) व सर्वज्ञ हैं वे अरिहंत हैं। ये जब तक सिद्ध नहीं होते, तब तक ही शरीर सहित हैं।

जो अरिहंत होने के बाद शरीर से भी रहित हो जाते हैं वे सिद्ध हैं। ये ऊपर लोक के अन्त में विराजमान हैं।

जो वीतराग रहने के लिये चारित्र पालते हैं व साधुओं को चारित्र पालन कराते हैं, वे साधु आचार्य हैं।

जो साधु चारित्र पालते हुये दूसरे साधुओं को ज्ञान सिखाते है, वे साधु उपाध्याय हैं।

जो वीतराग रहने के लिये चारित्र पालते हैं, वे साधु हैं।

## प्रश्नावली

१. णमोकार मंत्र को शुद्ध पढ़ो तथा बताओ कि णमोकार मंत्र में कितने वाक्य हैं ?

२. णमोकार मंत्र में किन किन को नमस्कार किया है और उन सबका एक नाम क्या है?

३. परमेष्ठी कितने और कौन-कौन हैं ? नाम बताओ ?

४. णमोकार मंत्र में किसी विशेष नाम वाले को नमस्कार किया या नहीं और वह क्यों ?

५. णमोकार मंत्र में कितने अक्षर हैं ?

६. सिद्ध व साधु किन्हें कहते हैं ? तुम्हे सिद्ध मिल सकते हैं या साधु ?

७. णमोकार मंत्र का माहात्म्य बताओ ?

## पाठ २

## चत्तारि दंडक

चत्तारि मंगलं–अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा– अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि– अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अर्थ – मंगल चार हैं – अरहंत मंगल हैं, सिद्ध मंगल हैं, साधु मंगल हैं, केवलि के द्वारा प्रणीत धर्म मंगल है।

लोक में उत्तम चार हैं – अरहंत लोक में उत्तम हैं, सिद्ध लोक में उत्तम हैं, साधु लोक में उत्तम हैं और केवली के द्वारा प्रणीत धर्म लोक में उत्तम है।

मैं चार की शरण को प्राप्त होता हूँ – अरहंतों की शरण को प्राप्त होता हूँ, सिद्धों की शरण को प्राप्त होता हूँ, साधुओं की शरण को प्राप्त होता हूँ और केवली के द्वारा प्रणीत धर्म की शरण को प्राप्त होता हूँ।

### प्रश्नावली

१. मंगल पाठको शुद्ध पढ़ो और बताओ कि मंगल कितने और कौन-कौन हैं ?

२. लोकोत्तम का क्या मतलब है ? लोकोत्तम कितने हैं ? नाम बताओ ?

३. साधु लोकोत्तम हैं ऐसा कहने में साधु शब्द से कौन-कौन परमेष्ठी आ जाते हैं ?

४. अन्त में किसकी शरण की बात कही गई है ?

५. चत्तारि दंडक को पूरा पढ़ो और शरणपद का अर्थ करो।

६. पव्वज्जामि, लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो - इन शब्दों का अर्थ बताओ ?

## पाठ ३

### वर्तमान २४ तीर्थंकरों के नाम व चिन्ह

| क्रम संख्या | तीर्थंकरों के नाम | चिन्ह |
|---|---|---|
| १ | श्री ऋषभनाथ जी | के बैल |
| २ | श्री अजितनाथ जी | के हाथी |
| ३ | श्री संभवनाथ जी | के घोड़ा |
| ४ | श्री अभिनन्दननाथ जी | के बन्दर |
| ५ | श्री सुमतिनाथ जी | के चकवा |
| ६ | श्री पद्मप्रभु जी | के कमल |
| ७ | श्री सुपार्श्वनाथ जी | के साँथिया |
| ८ | श्री चन्द्रप्रभु जी | के चन्द्रमा |
| ९ | श्री पुष्पदन्त जी | के मगर |
| १० | श्री शीतलनाथ जी | के कल्पवृक्ष |

| | | |
|---|---|---|
| ११ | श्री श्रेयांसनाथ जी | के गैंडा |
| १२ | श्री वासुपूज्य जी | के भैंसा |
| १३ | श्री विमलनाथ जी | के शूकर |
| १४ | श्री अनन्तनाथ जी | के सेही |
| १५ | श्री धर्मनाथ जी | के वज्रदंड |
| १६ | श्री शान्तिनाथ जी | के हरिण |
| १७ | श्री कुन्थुनाथ जी | के बकरा |
| १८ | श्री अरनाथ जी | के मच्छ |
| १९ | श्री मल्लिनाथ जी | के कलश |
| २० | श्री मुनिसुव्रतनाथ जी | के कछुआ |
| २१ | श्री नमिनाथ जी | के लालकमल |
| २२ | श्री नेमिनाथ जी | के शंख |
| २३ | श्री पार्श्वनाथ जी | के सर्प |
| २४ | श्री महावीर जी | के सिंह |

इनमें से श्री ऋषभनाथ को आदिनाथ, पुष्पदन्त को सुविधिनाथ भी कहते हैं।

श्री महावीर जी के ५ नाम है – महावीर, वर्द्धमान, सन्मति, वीर तथा अतिवीर।

ये २४ तीर्थंकर इस भरतक्षेत्र में अभी चौथे काल में हो चुके हैं। इनकी परम्परा से वर्तमान में तीर्थं चला आ रहा है, इसलिये इन्हें वर्तमान तीर्थंकर कहते हैं।

तीर्थंकर उन्हें कहते हैं जो विशेषरूप से धर्मतीर्थं के नेता होते हैं। इनके गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और निर्वाण ये

५ कल्याणक होते हैं।

चिन्ह – जब तीर्थंकर का जन्म होता है तब इन्द्रादि देवगण तीर्थंकर को जन्माभिषेक के लिये मेरु पर्वत पर ले जाने के लिये उनके माता पिता के घर पर आते हैं, इन्द्राणी बालक को लेकर इन्द्र को सौंपती है, उस समय उनके पैर में जो चिन्ह इन्द्र को पहिले दिखता है, इन्द्र उस चिन्ह को अपनी ध्वजा में बनाता है और उस चिन्ह की तभी से प्रसिद्धि हो जाती है।

## प्रश्नावली

१. तीर्थंकरों के ये चिन्ह कब और कैसे प्रसिद्ध होते हैं ?
२. तीर्थंकर किन्हें कहते हैं और उनके कल्याणक कितने होते हैं ? उनके नाम बताओ?
३. वर्तमान में किस तीर्थंकर का तीर्थ चल रहा है ?
४. चौबीस वें तीर्थंकर के कितने नाम हैं ? बताओ ?
५. ये चौबीस तीर्थंकर कब हुये थे और इस समय इनका आत्मा कहाँ है ?
६. नवें से लेकर सोलहवें तक ८ तीर्थंकरों के नाम बताओ।
७. नमिनाथ, सुपार्श्वनाथ, अभिनन्दननाथ, धर्मनाथ, शान्तिनाथ, इन तीर्थंकरों के चिन्ह बताओ ?
८. बकरा, शंख, मगर, रोही, चकवा ये किन तीर्थंकरों के चिन्ह हैं ?
९. ये तीर्थंकर २४ ही होते हैं या कम ज्यादा ?

पाठ ४

# विद्यमान २० तीर्थंकर

जहाँ हम रहते हैं, यह जम्बूद्वीप का भरतक्षेत्र है। यहाँ तो वर्तमान २४ तीर्थंकर हो चुके और जम्बूद्वीप में १, धातकी खंड में २, पुष्करार्द्ध में २ इस प्रकार ढाई द्वीपों में ५ विदेह हैं। वहाँ पर इस समय २० तीर्थंकर हैं, उन्हें विद्यमान बीस तीर्थंकर कहते हैं। उनके नाम ये हैं –

१. श्री सीमंधर जी, २. श्री युग्मंधर जी, ३. श्री बाहु जी, ४. श्री सुबाहु जी, ५. श्री संजात जी, ६. श्री स्वयंप्रभ जी, ७. श्री ऋषभानन जी, ८. श्री अनन्तवीर्य जी, ९. श्री सूरप्रभ जी, १०. श्री विशालकीर्ति जी, ११. श्री वज्रनाथ जी, १२. श्री चन्द्रानन जी, १३. श्री भद्रबाहु जी, १४. श्री भुजंगम जी, १५. श्री ईश्वर जी, १६. श्री नेमिप्रभ जी, १७. श्री वीरसेन जी, १८. श्री महाभद्र जी, १९. श्री देवयश जी, २०. श्री अजितवीर्य जी।

(शिक्षक महोदय ढाई द्वीप का चित्र बनाकर उक्त बात विद्यार्थियों को समझा सकते हैं।)

प्रश्नावली

१. विदेह के बीस तीर्थंकरों में नाम गिनाओ।

२. विदेह क्षेत्र कितने द्वीपों में है ?

३. जम्बूद्वीप में विदेह क्षेत्र एक तरफ है या बीच में ?

४. ये बीस तीर्थंकर इस समय हैं या नहीं ?

पाठ ५

# प्रभु स्तुति

(बुधजन कृत)

प्रभु पतितपावन मैं अपावन चरण आयो शरण जी।
यों विरद आप निहार स्वामी मेट जामन मरण जी।।१।।
तुम न पिछान्यो आन मान्यों देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धिसेती निज न जान्यौ भ्रम गिन्यौ हितकार जी।।२।।
भव विकट वन में कर्म वैरी ज्ञान धन मेरो हर्‌यौ।
तब इष्ट भूल्यौ भ्रष्ट होय अनिष्ट गति धरता फिर्‌यौ।।३।।
धन घड़ी यों धन दिवस यों ही धन जनम मेरो भयौ।
अब भाग्य मेरो उदय आयो दरश प्रभु जी को लख लयौ।।४।।
छवि वीतरागी नगन मुद्रा दृष्टि नासा पै धरैं।
वसु प्रातिहार्य अनंतगुण युत कोटि रवि छवि को हरैं।।५।।
मिट गयौ तिमिर मिथ्यात्व मेरो उदय रवि आतम भयौ।
मो उर हरष ऐसो भयौ मनु रंक चिन्तामणि लयौ।।६।।
मैं हाथ जोड़ नवाऊं मस्तक वीनऊं प्रभु चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन सुनहु तारण तरण जी।।७।।
जाचूं नहीं सुरवास पुनि नरराज परिजन साथ जी।
बुध जाचहुं प्रभुभक्ति भव-भव दीजिये शिवनाथ जी।।८।।

प्रश्नावली

१. यह प्रभस्तुति किसने बनाई है ?

२. "धन घड़ी" यहाँ से लेकर "चिन्तामणि लयौ" यहाँ तक पढ़ो।

# बालकों के लिये १७ नियम

आच्छा सुखमय जीवन बनाने के लिये इन नियमों का पालन करो :-

१. प्रातःकाल जल्दी उठकर नमस्कार मंत्र का जाप करना।
२. शिक्षक, माता, पिता, गुरुजन आदि को प्रणाम करना।
३. गुरुजनों से पढ़ते समय पढ़ने में ही चित्त लगाना।
४. रोज का पाठ रोज ही पूरी तरह से याद कर लेना।
५. रात दिन का प्रोग्राम लिखकर उसके अनुसार चलना।
६. सबसें यथायोग्य विनयपूर्वक उत्तम से उत्तम बात बोलना।
७. कम से कम एक धार्मिक ग्रंथ का प्रतिदिन स्वाध्याय करना।
८. हिंसारहित सादा भोजन दिन में ही यथायोग्य कम से कम बार करके सन्तुष्ट रहना।
९. यथाशक्ति दीन दुःखी जनों का उपकार करते रहना।
१०. पराई वस्तु को नहीं चाहना, न उसकी आशा करना।
११. गुस्सा, घमंड, छल व तृष्णा से दूर रहने का भाव रखना।
१२. कभी कषाय अधिक हो जाये, उस समय मौन रहना।
१३. सिनेमा, नाटक, वेश्यागृह आदि कुस्थानों में न जाना।
१४. भंग, तम्बाकू, अफीम आदि नशीली चीजों का इस्तेमाल नहीं करना।
१५. चमड़े के थैले, चैन, बक्स, टोपी, कोट आदि वस्तुओं का उपयोग न करना।
१६. रेशमी, बहुत पतला सूती, चटकीला वस्त्र नहीं पहिनना।
१७. आतिशबाजी, फटाका फोड़ना आदि हिंसाजनक विनोद कभी भी नहीं करना।

तक पढ़ो।

## पाठ ६

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर भविजन की अब पूरो आश।
ज्ञानभानुका उदय करो मम मिथ्यातमका होय विनाश।।१।।
जीवों की हम करुणा पालें झूठ वचन नहिं कहें कदा।
चोरी कबहुं न करहूं स्वामी ब्रह्मचर्य व्रत रखें सदा।।२।।
तृष्णा लोभ बढ़े न हमारा तोष सुधा नित पिया करें।
श्री जिन धर्म हमारा प्यारा उसकी सेवा किया करें।।३।।
दूर भगावें बुरी रीतियाँ सुखद रीतिका करें प्रचार।
मेल मिलाप बढ़ावें हम सब धर्मोन्नतिका करें प्रसार।।४।।
सुख दुख में हम समता धारें रहें अचल जिमि सदा अटल।
न्याय मार्ग को लेश न त्यागें वृद्धि करें निज आतमबल।।५।।
अष्ट कर्म जो दुःख हेतु हैं तिनके क्षयका करें उपाय।
नाम आपका जपैं निरन्तर विघ्न शोक सबहि टल जाय।।६।।
आतम शुद्ध हमारा होवे पाप मैल नहीं चढ़े कदा।
विद्याकी हो उन्नति हममें धर्मज्ञान हूं बढ़ै सदा।।७।।
हाथ जोड़कर शीश नवावें तुमको भविजन खड़े खड़े।
यह सब पूरो आश हमारी चरण शरण में आन पड़े।।८।।

।। समाप्तम् ।।